महात्मा गांधी के शैक्षिक विचार एवं उनकी नयी तालीम की वर्तमान में प्रासंगिकता

कमलेश मौर्या
असिस्टेंट प्रोफेसर (शिक्षा विभाग),
रजत कॉलेज लखनऊ

सारांश

महात्मा गांधी का व्यक्तित्व आदर्शवादी रहा है। उनका आचरण प्रयोजनवादी विचार धारा से मिला हुआ था। विश्व के अधिकांश लोग उन्हें महान राजनीतिज्ञ एवं समाज सुधारक के रूप में जानते हैं, परन्तु उनका यह मानना था कि सामाजिक उन्नति हेतु शिक्षा का एक महत्वपूर्ण योगदान होता है। गांधीजी का शिक्षा के क्षेत्र में भी विशेष योगदान रहा है। उनका मूल मंत्र था- शोषण-विहीन समाज की स्थापना करना। उसके लिये सभी को शिक्षित होना चाहिए। उन्होनें अपने शिक्षा दर्शन में मनुष्य को एकादश व्रत (सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्वाद, अस्तेय, अपरिग्रह, अभय, अस्पृश्यता निवारण, कायिक श्रम, सर्वधर्म समभाव और विनम्रता को महत्त्व दिया ।गाँधी जी का शिक्षा दर्शन ही नहीं अपितु जीवन दर्शन भी प्रकृतिवाद प्रयोजनवाद तथा आदर्शवाद का समन्वय है। गाँधी जी ने सत्य, अहिंसा तथा प्रेम का विचार या दृष्टिकोण को स्वीकार किया है। अहिंत्ता प्रकृतिवादी विचार है तथा प्रेम प्रयोजनवादी विचार है। गांधी जी धर्म व नैतिकता में अटूट विश्वास रखते थे। बेसिक शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा प्रणाली से है जिसमे पुस्तकीय ज्ञान से परे हटकर मुलोद्योग पर आधारित एक व्यवहारिक एवं सर्वांगीण शिक्षा है।

मुख्य शब्दावली: *शैक्षिक दर्शन, बुनियादी शिक्षा, गांधीजी के विचार, स्वावलंबी, अहिंसा, सत्य*

१. प्रस्तावना

गाँधीजी द्वारा प्रतिपादित शिक्षा के सिद्धान्त जैसे बालकों एवं बालिकाओं को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्त दिया जाए। आज हम देखते हैं. देश के समस्त चों को शिक्षित करने हेतु कई तरह के प्रयास किये जा रहे हैं। निःशुल्क अनिवार्य शिक्षा साथ ही साथ बालकों एवं बालिकाओं के लिए कई योजनाओं का निर्माण किया गया है। महात्मा गाँधी के जीवन में सत्य, अहिंसा तथा प्रेम प्रमुख है। इन तीनों के आधार पर ही उनका सम्पूर्ण चिन्तन क्रियाशील था।महात्मा गाँधी भारत के एक महान विचारक, समाज सुधारक तथा शिक्षाविद थे। उनका शिक्षा दर्शन सत्य, अहिंसा तथा सत्याग्रह पर आधारित है। शिक्षा की उनकी लोकप्रिय परिभाषा अर्थात् "शिक्षा से मेरा अभिप्राय बच्चे के शरीर, मस्तिष्क एवं आत्मा का उत्तम रूप से सर्वांगीण विकास करना है",

मानव व्यक्तित्व के संपूर्ण विकास को सूचित करता है : शारीरिक, मानसिक, सामाजिक तथा आध्यात्मिक विकास। महात्मा गाँधी के अनुसार, सत्य, अहिंसा, सत्याग्रह, निर्भयता, विश्वास, मानवता आदि जैसे मूल्य किसी भी व्यक्ति के जीवन के आधार हैं। उनकी बुनियादी शिक्षा, शिल्प आधारित शिक्षा, नैतिक एवं मूल्य शिक्षा की अवधारणा का वर्तमान शिक्षा व्यवस्था पर महान प्रभाव है।

(1) सत्य (Truth): महात्मा जी का पहला आधार था सत्य। वे सत्य को ही ईश्वर मानते थे। उन्होंने स्वयं कहा कि ईश्वर सत्य है, सत्य ईश्वर है।'

(ii) अहिंसा (Non-Violence): अहिंसा को स्पष्टीकरण करते हुए गाँधीजी ने कहा है यह बुराई के प्रति अवरोध नहीं है। यह तो प्रेम के साथ प्रतिरोध है।

(iii) प्रेम (Love): महात्मा गाँधीजी सत्य और अहित के मूल में मानव मात्र को अधिक महत्व देते थे। वे इसे संजीवनी मानते थे। अपने दुश्मनों से भी प्यार करो, ऐशासनका मानना था। मालय सेवा का आधार ही मानव प्रेम है।

२. बुनियादी शिक्षा- नई तालीम

सन् 1937 में गांधीजी ने वर्धा में हो रहे 'अखिल भारतीय राष्ट्रीय शिक्षा सम्मेलन' जिसे वर्धा शिक्षा सम्मेलन कहा जाता है में नई तालीम के नाम से एक जीवन दर्शन तथा शिक्षा पद्धति देश के समक्ष प्रस्तुत की, जो अहिंसक, समतामूलक, न्यायाधिष्ठित समाज निर्माण का उद्देश्य रखती है। जिसके अंतर्गत निम्नलिखित बिंदु आते हैं।

1. सम्पूर्ण देश में 7 से 14 वर्ष तक बालकों की शिक्षा निःशुल्क और अनिवार्य होनी चाहिए।
2. शिक्षा का माध्यम मातृभाषा होना चाहिए।
3. शिक्षा विद्यार्थियों में समस्त मानवीय गुणों का विकास करे।
4. शिक्षा द्वारा बालकों को बेरोजगारी से एक प्रकार की सुरक्षा देनी चाहिए।
5. शिक्षा को बालकों की शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक शक्तियों को प्रोत्साहित करना चाहिए।
6. शिक्षण जीवन की वास्तविक परिस्थितियों में किया जाना बाहिए।

गाँधीजी के शब्दों में, "शिक्षा से अभिप्राय है, बालक और मनुष्य के शरीर, मस्तिष्क और आत्मा में पाए जाने वाले सर्वोत्तम गुणों का चतुर्मुखी विकास"

३. वर्तमान परिप्रेक्ष्य में अध्ययन की आवश्यकता

शिक्षक समाज का निर्माता होता है, और यही शिक्षण का मुख्य बिन्दु होता है। अतः आज के बदलते परिवेश में शिक्षक के भी आचार-विचार एवं व्यवहार पर विचार करना आवश्यक है। आज का शिक्षक शिक्षण कार्य को व्यवसाय के रूप में अपनाता है, न कि सेवा भाव के रूप में। गाँधीजी के अनुसार शिक्षकों को अपने विषय का पूर्ण ज्ञाता एवं चरित्रवान, क्षमाशील, मृदुभाषी, मिलनसार, कर्तव्य परायण, विनोद प्रिय तथा श्रमी होना चाहिए। गाँधीजी ने अपनी शिक्षा योजना में शिक्षक की भूमिका को एक मित्र सहायक तथा पथ-प्रदर्शक के

रूप में स्वीकार किया है। आज की प्राथमिक शिक्षा व्यवस्था पर यदि दृष्टि डाली जाए तो ज्ञात होता है, कि इसमें व्यवसायिक शिक्षा का अभाव है। जबकि शिक्षा का एक महतापूर्ण उद्देश्य जीविकोपार्जन का होता है। गांधीजी का मन्तव्य था कि जब तक बच्चे 14 वर्ष की अवस्था पूर्ण नहीं कर लेंगे तब तक राज्य उनको निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा प्रदान करने का प्रयास करेगा। गाँधीजी का विचार था कि बालक में शरीर के अंगों का विवेकपूर्ण प्रयोग उनके मस्तिष्क को विकसित करने की सर्वोत्तम और शीघ्रतम विधि है।

४. अध्ययन के उद्देश्य

गांधीजी के शैक्षिक दर्शन का वर्तमान समय में अध्ययन करना

५. बुनियादी शिक्षा

गाँधीजी ने बुनियादी शिक्षा को निम्नलिखित उद्देश्यों पर स्थापित किया। बुनियादी शिक्षा के आर्थिक उद्देश्य को स्पष्टकरते हुए गाँधीजी ने लिखा है कि- प्रत्येक बालक और बालिका को विद्यालय छोड़ने के पश्चात् किसी व्यवसाय में लगाकर उसे स्वावलम्बी बनाना चाहिए। अतः बुनियादी शिक्षा का एक मुख्य उद्देश्य है- बालक का नैतिक विकास करना। अतः बुनियादी शिक्षा को प्राप्त करने के लिए गाँधीजी ने किया प्रधान पाठ्यचर्या का निर्माण किया था। जिसमें हस्तकौशल एवं उद्योग के अन्तर्गत कताई, बुनाई, बागवानी, कृषि, काष्ठकला, चर्म कार्य, पुस्तक कला, मिट्टी का काम, मछली पालन, गृह विज्ञान आदि विषयों का समावेश किया। इसके साथ ही साथ उन्होने पाठ्यक्रम में मातृभाषा, व्यवहारिक गणित, सामाजिक विषय, सामान्य विज्ञान आदि पर विशेष बल दिया।

६. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन में दार्शनिक शोध विधि का अध्ययन किया। इसके अन्तर्गत महात्मा गाँधीजी के विचार एवं शैक्षिक दर्शन की वास्तविकता को लिया गया है। बुनियादी शिक्षा के मुख्य सिद्धान्त निम्नांकित है ।

1. जनसाधारण की शिक्षा: भारत की अधिकाश जनता-अज्ञानता के अन्धकार से आवृत्त है। यही कारण है कि बुनियादी शिक्षा का सर्व सिद्धान्त-जनसाधारण को शिक्षित बनाना निर्धारित किया गया है। इस प्रकार, गाँधीजी के निम्म कथन के अनुसार कार्य किया जा रहा है- "जनसाधारण की अशिक्षा भारत का पाप और कलश है। उसका अन्त किया जाना अनिवार्य है।"

2. निःशुल्क व अनिवार्य शिक्षा: गाँधीजी ने प्रत्येक बच्चे के लिये जो 6 से 14 बर्ष तक को आयु का हो उसके लिए निःशुल्क और अनिवार्य शिक्षा की व्यवस्था की।

3. स्वावलम्बी शिक्षा: गाँधीजी ने बुनियादी शिक्षा में कहा कि "सच्ची शिक्षा स्वावलम्बी होनी चाहिए। इसका मतलब यह है कि शिक्षा से पूँजी के अतिरिक्त वह सब धन मिल जाना चाहिए, जो उसे प्राप्त करने में व्यय किया जाय।"

बुनियादी शिक्षा दो प्रकार से स्वावलम्बी है- (i) बुनियादी शिक्ष प्राप्त करने वाला बालक किसी हस्तशिल्प को सीखकर, उसे अपने भावी जीवन के निर्वाह का सार बनाए, और (ii) विद्यालय के बालकों द्वारा बनाई जाने वाली वस्तुओं को बेचकर, अध्यापको को वेतन दिया जाय। इस प्रकार, बालक अपने विद्यालय-जीवन और भावी जीवन दोनों में अपने ऊपर निर्भर होकर, स्वावलम्बी बन सकता है।

4. सामाजिक शिक्षा: बुनियादी शिक्षा के द्वारा जब सबको शिक्षा प्राप्त होगी तब सब पढ़ेंगे और सब बढ़ेंगे सबको अपने अधिकारों का पता होगा एक ऐसे समाज का निर्माण होगा जहां सब बराबर होंगे सब स्वार्थ से ऊपर होंगे जहा सिर्फ प्यार और भाईचारा होगा। और जिसके मूलमन्त्र-सत्य एवं अहिंसा हों। यही कारण है कि बुनियादी विद्यालयों में बालकों को इसी प्रकार के समाज में रहने का प्रशिक्षण दिया जाता है।

5. शिक्षा का माध्यम, 'मातृभाषा': बुनियादी शिक्षा का माध्यम मातृभाषा है।मातृभाषा के माध्यम से हम आपीने साहित्य को जिन्दा राख सकते है । इतिहास हमें बताता है कि किसी देश की संस्कृति का विनाश करने के लिए, उसके साहित्य का विनाश किया जाता है। इसी सिद्धान्त का पालन करके, अंग्रेजों ने अंग्रेजी भाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया। बुनियादी शिक्षा में अंग्रेजी को कोई स्थान नहीं दिए गया है और मातृभाषा को शिक्षा का माध्यम बनाया गया है।

6. शिल्प की शिक्षा: बुनियादी शिक्षा में हस्तशिल्प का महत्वपूर्ण स्थान है है और सब विषयों की शिक्षा उसी के माध्यम से दी जाती है। हस्तशिल्प को केन्द्रीय स्थान दिया गया है ।

7. शारीरिक श्रम: बुनियादी शिक्षा में हस्तशिल्प के माध्यम से शारीरिक शिक्षा को महत्वपूर्ण स्थान प्रदान किया है। (1) इससे बालको को किसी व्यवसाय का प्रशिक्षण दिया जाता है इससे विश्वास उत्पन्न होता है और उनमें शारीरिक श्रम के प्रति घृणा नहीं रह जाती है।

७. बुनियादी शिक्षा के गुण या विशेषताएँ

1. बेसिक आधार: बुनियादी शिक्षा क्रिया-प्रधान, बाल-केन्द्रित शिक्षा है और बालक क्रिया द्वारा ज्ञान का अर्जन करता है।"

2. आर्थिक आधार: बुनियादी शिक्षा का आधार आर्थिक है। इसके समर्थन में दो तर्क उपस्थित किए जा सकते हैं: यथा- (i) बुनियादी विद्यालयों में बालकों द्वारा बनाई जाने वाली अतुओं को बेचने से विद्यालय का कुछ व्यय निकल सकता है, और (ii) बालक किसी हस्तशिल्प को रोडकर अपने भावी जीवन में धन का अर्जन कर सकता है।

3. सामाजिक आधार: बुनियादी शिक्षा का आधार सामाजिक है, क्योकि बालक में हस्तशिल्प के नाध्यम से सेवा और स्नेह, सहयोग और सहिष्णुता, आत्म-संयम और आत्म-विश्वास के गुणों को विकसित करने का पूरा प्रयास किया जाता है।

4. मनोवैज्ञानिक आधार: -बुनियादी शिक्षा का मुख्य आधार है. क्योंकि इसमे बालक को प्राधानता दी जाती है. न कि उसके द्वारा अध्ययन किए जाने वाले पाठ्य-विषयों को।

5. समवायी शिक्षण-विधि: बुनियादी शिक्षा में समवय शिक्षण-विधि" का प्रयोग किया जाता है। दूसरे शब्दों में, उसे क्रिया के द्वारा ज्ञान प्रदान किया जाता है। वह अ कताई-बुनाई, काष्ठ-कला आदि में से किसी हस्तशिल्प का चयन करता है। उसके पश्चात्, उस कार्य को करके, उसका और उससे सम्बन्धित कार्यों का ज्ञान प्राप्त करता है

८. वर्तमान समय में प्रासंगिकता

वर्तमान समय में शिक्षा का अधिकार अधिनियम 2009 कही न कही गांधी जी की शिक्षा बुनियादी शिक्षा का ही एक वर्तमान रूप है। गांधी जी ने बहुत पहले ही 6 से 14 वर्ष के बच्चों को अनिवार्य एवं निःशुल्क शिक्षा का प्रावधान किया था उन्ही की विचार धारा से प्रेरित होकर हमारे संविधान में सबसे पहले अनुच्छेद 45 में सबको शिक्षा देने की बात कही गयी फिर शिक्षा का अधिकार को मौलिक अधिकारों में 21A में शामिल किया गया और सबको शिक्षा देना सरकार की बाध्यता हो गयी ।अनिवार्य शिक्षा के माध्यम से मुख्यधारा से हटे हुए बच्चे भी निःशुल्क शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे और आपने अधिकारों के प्रति जागरूक रहेंगे । समाज में भाईचारा बढ़ेगा ।

९. निष्कर्ष

यदि गाँधीजी के शिक्षा दर्शन का मूल्यांकन करें तो हम यह निःसंकोच कह सकते हैं कि आज के बदलते परिवेश में गाँधीजी के शैक्षिक दर्शन की अत्याधिक प्रासंगिकता है। वे शिक्षा के सैद्धान्तिक पक्ष से कभी भी सहमत नहीं थे। इसी कारण शिक्षा दर्शन के रूप में उन्होनें शिक्षा का गत्यात्मक रूप प्रस्तुत किया। शिक्षा के क्षेत्र में उन्होनें महत्वपूर्ण स्थान इस बात को भी दिया कि शिक्षा को देश की विद्यमान आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक परिस्थितियों के अनुकूल होना चाहिए। उन्होने एक ऐसी शिक्षा की परिकल्पना की जो समस्त भारतीयों को एकता के सूत्र में बाँध सके। और जहा सब पढ़ सके अपने अधिकारो को समझ सके । भाईचारे से रह सके।

सन्दर्भ सूची

1. गाँधी, मो. क. (1980). सत्य के प्रयोग अथवा आत्मकथा, सरता साहित्य मंडल, नई दिल्ली।
2 गाँधी, मो. क. (1970). बुनियादी शिक्षा, नवजीवन प्रेस, अहमदाबाद।
3. प्रतियोगिता दर्पण तथा योजना 2000, 2002, मासिक पत्रिका।
4. उदद्यमान भारतीय समाज में शिक्षक, N.R स्वरूप सक्सेना पृष्ठ संख्या 326